WK 14 • 093-272
03 APRIL WEDNESDAY
APPOINTMENTS

सामाजिक समस्याएँ
(Social Problems)

सामाजिक समस्या से तात्पर्य एक ऐसी स्थिति से होती है. जिससे समाज का एक बड़ा भाग प्रभावित होता है। इसके ऐसे हानिकारक परिणाम होते हैं या हो सकते हैं जिनका मात्र सामूहिक रूप से ही समाधान संभव हो पाता है। जैसे- भारत में व्याप्त बेरोजगारी, गरीबी की समस्या, जनसंख्या वृद्धि, युद्ध, असंतोष, महामारी, आतंकवाद आदि की समस्याएँ। इन सामाजिक समस्याओं से समाज का एक बड़ा भाग या वर्ग प्रभावित है. तथा इन समस्याओं का हल किसी एक व्यक्ति से संभव नहीं है। इसके लिए सरकार, सामाजिक संस्थाएँ, बुद्धिजीवि तथा अन्य गैर सरकारी संस्थाओं का एक ईमानदार संयुक्त प्रयास की आवश्यकता है।

सामाजिक समस्या के स्वरूप को समझने के लिए मनोवैज्ञानिकों एवं समाजशास्त्रियों ने इसकी कुछ प्रमुख विशेषताओं पर प्रकाश डाला है, जो निम्नांकित हैं:-

→ सामाजिक समस्याएँ आदर्श तथा सामाजिक मानक से एक प्रकार का विचलन होती हैं।

→ सामाजिक समस्याओं की उत्पत्ति का एक सामान्य आधार होता है।

→ सभी सामाजिक समस्याओं का जड़ सामाजिक ही होता है।

→ सभी सामाजिक समस्याओं का परिणाम भी सामाजिक ही होता है, क्योंकि इसका प्रभाव प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से पूरे समाज पर ही पड़ता है।

→ सामाजिक समस्याओं के समाधान का दायित्व व्यक्तिगत न होकर सामाजिक होता है।

सामाजिक समस्याओं के प्रकार —

समाज मनोवैज्ञानिकों एवं समाजशास्त्रियों ने सामाजिक समस्याओं को निम्नांकित तीन प्रमुख श्रेणियों में बाँटने का प्रयास किया है, जो निम्नांकित है—

NOTES

• प्राकृतिक कारणों से उत्पन्न सामाजिक समस्याएँ

Scanned with CamScanner

- सुधारात्मक समस्याएँ तथा
- नैतिक समस्याएँ—

APPOINTMENTS

- **प्राकृतिक कारणों से उत्पन्न सामाजिक समस्याएँ**— ऐसी सामाजिक समस्या की उत्पत्ति प्राकृतिक कारणों से होती है, जो सामाजिक संरचना को अस्त-व्यस्त कर देती हैं। जैसे- अकाल, बाढ़, भूकम्प, महामारी आदि से उत्पन्न सामाजिक समस्याएँ इस श्रेणी की समस्याएँ हैं।

- **सुधारात्मक समस्याएँ**— ऐसी सामाजिक समस्याओं का स्वरूप कुछ ऐसा होता है, जिसके दुष्प्रभावों के बारे में तो आम सहमति होती है, परंतु इसके समाधान के बारे में आम सहमति नहीं हो पाती है। जैसे— गरीबी, अपराध, आतंकवाद, मादक पदार्थों का सेवन आदि।

- **नैतिक समस्याएँ**— इस श्रेणी की सामाजिक समस्या कुछ ऐसी होती हैं जिनकी प्रकृति एवं कारणों के बारे में आम सहमति नहीं होती हैं। जैसे— तलाक, विधवा विवाह, जुआ आदि की समस्याएँ इसी समस्या की श्रेणी में रखी जाती हैं।

सामाजिक समस्याओं का समाधान

सामाजिक समस्याओं के समाधान के प्रति मनुष्यों में प्रारंभ से ही उत्सुकता रही है। ऐसी समस्याओं के समाधान के कई उपायों का वर्णन मनोवैज्ञानिकों एवं समाजशास्त्रियों द्वारा किया गया है। जिसे मूलतः दो भागों में बाँटा जा सकता है—

- उपचारक विधियाँ (Remedial Methods)
- निरोधक विधियाँ (Preventive Methods).

उपचारक विधियों में उन विधियों को सम्मिलित किया जाता है. जिसमें सामाजिक समस्या के परिणामों या लक्षणों (न कि उसके कारणों) की पहचान करके उस समस्या को दूर करने की कोशिश की जाती है।

निरोधक विधि से तात्पर्य उन विधियों से होता है, जिसमें सामाजिक समस्या के कारणों का पता लगाकर उन्हें

NOTES

दूर करने का प्रयास किया जाता है। जैसे- नगरीकरण तथा पूंजीकरण से उत्पन्न तंगी की पहचान करके यदि इन समस्याओं को दूर करने का उपाय किया जाता है तो इसे उपचारक विधि कहा जाएगा परंतु यदि इनके कारणों को ध्यान में रखकर उसे दूर करने का उपाय किया जाता है तो इसे निरोधक विधियों कहा जायेगा।

कुछ समाज सुधारकों द्वारा सामाजिक समस्याओं के समाधान के लिए कुछ सामान्य सुझाव भी दिये गये हैं। जैसे- कुछ समाज सुधारकों का मानना है कि अनुपयुक्त शिक्षा (Inappropriate education) ही अधिकांश सामाजिक समस्याओं की जड़ है। अतः उपयुक्त शिक्षा (Appropriate education) द्वारा अधिकांशतः सामाजिक समस्याओं का समाधान किया जा सकता है। परंतु इन सामाजिक समस्याओं का पूर्णतः समाधान कई कारणों से संभव नहीं हो पाता है।